सफ़रनामा हिन्दुस्तानी क़व्वाली : दरगाहों से चलचित्रों तक

डॉ. वैभव कैथवास, सहायक प्राध्यापक, गायन विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, सागर रोड दमोह, मध्य–प्रदेश
ईमेल– vaibshruti91@gmail.com

सारांश– क़व्वाली गायिकी का मुख्य उद्देश्य निर्गुण काव्यों एवं सूफी कलामों को गाकर खुदा–ए–पाक की ख़िदमत करना है। अपनी एक अलग रूहानियत और मलंग अंदाज के साथ खुदा की ख़िदमत में लींन क़व्वाली ही खास क़व्वाली कही गई। समय के साथ–साथ क़व्वाली का भी क्षेत्र विस्तार होने लगा और क़व्वाली की विषय वस्तु ईश्वर भक्ति एवं अपनी रूहानी तासीर से हटकर मनोरंजन केंद्रित हो गई। फलतः क़व्वाली ने जनसामान्य तक पहुँचने के कई माध्यम का सहारा लिया और असल क़व्वाली ख़ानकाहों से निकलकर रंगमंचों से गुजरती हुई सर्वप्रथम 1925 में ध्वनयांकन रूप में प्राप्त हुई परन्तु यह सिलसिला यहीं नही रूका और क़व्वाली ने अपने नये अंदाज में सन् 1934 में चलचित्रों में पदार्पण किया। इस आधार पर दरगाहों से चलचित्रों में आगमन हुआ प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदुस्तानी क़व्वाली के सफरनामें का जिक्र किया जा रहा है जिसमें दरगाहों से लेकर चलचित्रों तक के परिवेश में जाने की रुपरेखा को दिखाने का प्रयास किया गया है जो इस प्रकार विदित है। जिसमें सिनेमा के इतिहासकार का कहना है, ''कि हिन्दुस्तानी फिल्म संगीत में क़व्वाली का पदार्पण 1945 ई0 में फिल्म जीनत से मानते हैं। जिसमें यह भी कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी फिल्म में पहली मर्तबा क़व्वाली शामिल हुई। लेकिन कुछ तफसील के आधार पर क़व्वाली इससे पहले की फिल्मों में भी मिलती है।

कुंजी शब्द – रूहानियत, खिदमत, तफसील, ख़ानकाह, मर्तबा, तासीर।

प्रस्तावना – जब सवाक् फिल्मों का बिलकुल शुरूवाती दौर प्रारम्भ हुआ लगभग 1934 ई0 में रिलीज हुई फिल्म 'नाईट बर्ड' जो कलकत्ता की ईस्ट इंडिया फिल्म कम्पनी द्वारा निर्मित हुई जिसमें क़व्वाली का शुमार हुआ इस फिल्म के निर्देशक धीरेन गांगुली जी थे। इस फिल्म में कव्वाल कलाकार अनवरी, गुल हामिद, मजहर, नजीर आदि कलाकारों द्वारा इस रहस्य प्रधान फिल्म में यह क़व्वाली थी। इसमें क़व्वाली के बोल इस प्रकार थेः– हसीनों के काबू में आना पड़ा, उठाना पड़ा नाज उठाना पड़ा। इस फिल्म के संगीतकार व गीतकार का पता नही चलता।

फिल्म जीनत में क़व्वाली क़व्वाली के बोल थेः– आहें न भरी शिकवे न कियेध्कुछ भी न जबां से काम लिया। जिसमें जोहराबाई अम्बालेवाली, नूरजहाँ और कल्याणी द्वारा गायी गई। इस क़व्वाली ने खूब शोहरत हासिल की।[1] इसी से दो वर्ष पहले 1958 में जोधपुर (राजस्थान) के बोहरा बंधुओं ने (निर्माता श्री राम बोहरा और निर्देशक राम कुमार बोहरा) की एक सामान्य फिल्म 'अल हिलाल' (महिपाल, शकीला, हीरालाल) आयी जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'हमें तो लूट लिया मिलके हुस्न वालों ने' देश भर में इस क़व्वाली ने इतिहास रच दिया इस क़व्वाली की बदौलत बॉक्स ऑफिस पर जबरर्दस्त हिट हुई। गायक इस्माइल आजाद और इसके संगीतकार थे बुलो सी० रानी और गीतकार शेवन रिजवी। हिन्दुस्तान के फिल्म संगीत के इतिहास में 1960 से 1970 के दशक में क़व्वाली को बड़ा उरूज मिला।

क़व्वाली को असल रूप में स्थापित किया गया 1960 में बनी फिल्म 'बरसात की रात' जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'न तो कारवां की तलाश है, न तो हमसफर की तलाश है'। यह क़व्वाली साहिर लुधियानवीं के लफजों द्वारा गाई गई और संगीत रोशन जी द्वारा दिया गया। फिर के० आसिफ की महान कृति 1960 में आयी फिल्म 'मुगले आजम' में क़व्वाली तेरी महफ़िल में किस्मत आजमां कर हम भी देखेंगे' ने धूम मचाया जिसमें शमशाद बेगम, लता मंगेशकर जी ने गाया। फिर इसी तरह 'दिल ही तो है'में साहिर लुधियानवीं और रोशन जी ने 1963 में आशा भोसले जी की आवाज में 'निंगाहें मिलाने को जी चाहता है' और 1963 में ही बनी फिल्म ताजमहल में 'चाँदी का बदन सोने की नजर उस पर ये नजाकत क्या कहिये' यह क़व्वाली मन्ना डे, मोहम्मद रफी, आशा भोसले एवं मीना कपूर द्वारा गायी गई।[2]

रोशन के बाद कुछ अच्छी क़व्वालियाँ बनाने का श्रेय संगीतकार रवि जी को भी जाता है। जिन्होंने सन् 1960 में आयी फिल्म 'चौदवीं का चाँद' में कमाल की क़व्वाली तैयार की थी। ये गायिकाओं की क़व्वाली थी। 'शर्मा

 Copyright @ 2024 Author

के यू सब पर्दानशी, आँचल को संवारा करते हैं' इसे गाया शमशाद बेगम और आशा भोसले जी ने रबि जी ने 1963 में एक क़व्वाली और दी जिसके बोल थे 'जिसको इश्क़ तबीयत की बात है' फिल्म थी 'आज और कल' इसे गाया शमशाद गेगम और उषा मंगेशकर जी ने था। ठीक इसी दौर में कुछ संगीतकारों ने अनमोल क़व्वालियाँ दीं। जैसे 1963 में ही आई फिल्म 'रूस्तम सोहराब' में 'फिर तुम्हारी याद आयी रे सनम' इसे गाया मोहम्मद रफी,मन्ना डे, सादत खांन ने। 1966 में मदन मोहन ने एक क़व्वाली दी फिल्म 'दुल्हन एक रात की' इसमें उन्होंने अल्लामा इकबाल की एक क़व्वाली कम्पोज की जिसके बोल थे 'कभी ऐ हक़ीकत–ए–मुन्तजर, नजर आ लिबास–ए–मजाज में' इसे गाया था लता मंगेशकर जी ने।
क़व्वाली के इस दौर में सचिन देव वर्मन जी भी थे। जिन्होंने सन् 1966 में फिल्म 'बेनजीर' में एक क़व्वाली दी जिसके बोल थे 'हम उनको देखते हैं, नजारा किए बगैर' इसे गाया आशा भोसले और मुबारक बेगम ने इसके गीतकार थे शकील बदायूंनी।
फिर दौर आता है लक्ष्मीकांत प्यारेलाल जी का फिल्म 'दुश्मन' बोले थे 'वादा तेरा वादा' क़व्वाली नुमा। फिर 1973 में फिल्म 'आनोखी अदा' में क़व्वाली दी 'हाल क्या है दिलों का ना पूछों सनम' फिर इन्होंने 'अमर अकबर एथंनी' में क़व्वाली दी 'पर्दा है पर्दा' यहाँ तक आते आते फिल्मी क़व्वाली अपनी अदाओं में क़व्वाली के पारम्परिक ढ़ाँचे को दूर करती जा रही थी।
"सत्तर के दशक में फिल्मी क़व्वालियाँ लगातार आती रही 1971 में राहुल देव वर्मन ने फिल्म 'अधिकार' में एक शानदार क़व्वाली दी जिसके बोल थे 'जीना तो है उसी का, जिसने ये राज जाना' फिर 1973 में कल्याण जी आनंन्द जी ने फिल्म जंजीर में एक क़व्वाली दी 'यारी है इमान मेरा, यार मेरी जिन्दगी' जैसी नायाब क़व्वाली दी। फिर 1977 में राहुल देव वर्मन ने फिल्म 'हम किसी से कम नही' जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'है अगर दुश्मन, जमाना कम नही कम नहीं। इसके बाद 1980 में 'द बर्निंग ट्रेन' में साहिर लुधियानवी की लिखी क़व्वाली 'पल दो पल का साथ हमारा' दिया।"[3]
फिर आशा भोसले के साथ उनकी क़व्वाली एक आई– 'नाजनीनों से हसीनों से तुम उलझा न करो' फिल्म 'शरीफ डाकू' 1960 में आयी। 1961 में एक फिल्म आयी 'रूम नम्बर 17' इस फिम में इस्माइल आजाद ने अनवर फरूखाबादी की एक ऐसी क़व्वाली गायी है जो बेशुमार लोकप्रिय हुई– 'सबको मालूम है मै शराबी नही,फिर भी कोई पिलाये तो मैं क्या करू, सिर्फ एक बार नजरों से नजरें मिलें, फिर कसम टूट जाये तो मै क्या करूं'। इस्माइल आजाद इसे महफिलों में भी गाया करते थे।

इसी तरह 1972 में एक फिल्म आई 'पुतली बाई' जिसमें यूसुफ आजाद और रशीदा खातून ने गाया जिसके बोल थे– 'कैसे बेशर्म आशिक हैं ये आज के, इनको अपना बनाना गजब हो गया', इसे लिखा जफर गोरखपुरी ने। फिर दौर आता है अजीज नाजा सन् 1974 में आयी फिल्म 'फाइव राइफल्स' में एक बहुत ही मशहूर क़व्वाली आयी जिसे गाया हिन्दुस्तान के बड़े मशहूर कव्वाल अजीज साहब ने जिन्हें क़व्वाली की महफिलों का सितारा कहा जाता था। क़व्वाली के बोल थे– झूम बराबर झूम शराबी इसे लिखा नाजा शोलापुरी ने। इसके अलावा 1976 में ही आई फिल्म 'फकीरा' में एक क़व्वाली थी 'हम तो झुक कर सलाम करते है' ये भी क़व्वाली अजीज नाजा साहब की आवाज में फिल्मायी गई।[4]
फिर वर्ष 1974 में एक फिल्म आयी 'गरम हवा' जिसके निर्देशक एम० एस० सथ्यू (मैसूर श्रीनिवास सथ्यू) जो क्लासिक फिल्मों की श्रेणी में रखी जाती है। जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'सूखी ऋतु में छायी बदरिया, चमकी बिजुरिया साथ डूबों तुम भी संग मेरे, या थामों मेरा हाथ' कैफी आजमी के लफ्जों में यह गीत और संगीतकार हुये 'मौला सलीम चिश्ती' इसको गाने वाले विश्व विख्यात कव्वाल अजीज अहमद खान वारसी जी थे।
इसी सिलसिलें में सन् 1976 में एक फिल्म आयी शंकर–शम्भू जिसमें कव्वाल जानी बाबू अजीज नाजा एक साथ क़व्वाली को गाया बोल थे –'हमें लूटने आए थे, हम लुट के जाएगें' ये क़व्वाली ज्यादा मकबूल नही हुई थी। इन्ही के दौर में जाने–माने कव्वाल शंकर शम्भू की आवाज फिल्मों में आयी फिल्म 'लैला मजनू' में उन्होंने अजीजनाजा, मोहम्मद रफी और अम्बर कुमार के साथ गाया– 'होके मायूस तेरे दर से कोई सवाली न गया' इसे लिखा 'साहिर लुधियानवी' ने था।[5]
क़व्वाली का दौर एसे चलता रहा फिर 1991 में आई फिल्म 'हिना' जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'देर न हो जाए कहीं देर न हो जाए' जिसे गाया सुरेश वाडेकर, लता मंगेशकर, फरीद साबरी और साथियों ने इसके बाद क़व्वाली का दौर फिर शुमार में आया। फिर सुभाष घई की फिल्म आई परदेश 1997 में इसमें क़व्वाली के बोल थे 'हो गया है मुझें प्यार'। फिर 1999 में आई फिल्म 'सिर्फ तुम' में नदीम श्रवण और फरीद साबरी एवं साथियों ने 'इक मुलाकात जरूरी है सनम' गाया था। हिन्दी फिल्म क़व्वाली के परिद्वश्य पर उस्ताद नुसरत फतेह अली खाँ साहब सबसे पहली बार 1981 में बनी फिल्म 'नाखुदा' में उनकी क़व्वाली आयी 'हक अली

 Copyright @ 2024 Author

मौला' उसके बाद शेखर कपूर की फिल्म आई 'बैंडिट क्वीन' जिसमें उन्होंने अपना संगीत दिया। फिर उन्होंने फिल्मी दुनियां में कई बेशुमार कव्वालियाँ दी जिसमें 1997 में आई फिल्म और प्यार हो गया में क़व्वाली के बोल थे 'कोई जाने' फिर 1999 में आई कच्चे धागे जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'इस शानें करम का क्या कहना' फिर 2000 में आयी फिल्म धड़कन में 'दूल्हे का सेहरा'।[6]

हालांकि इस बात को लेकर पारम्परिक क़व्वाल जो तसव्वुफ़ की ओर थे वो हमेशा खफा होते रहे क्यूकि क़व्वाली इबादत के रूप में गायी जाती थी। उसे श्रंगारिकता का रंग चढ़ा कर क़व्वाली के स्वाद को खराब किया लेकिन फिल्म ऐसी विधा है उसमें शुद्धता का कोई अनुपात नही हो पाता उसे लोगों के व फिल्म के जरूरत के हिसाब से ढ़ालना पड़ता है। फिल्म संगीत में गैर सिनेमा जगत के भी कव्वाल उभरे व समय के दरमियान चमके भी जैसेः– इस्माइल आजाद, यूसुफ आजाद, अजीज नाजा, जानी बाबू, रशीदा खातून और शकीला बानों भोपाली और नये जमानें में नुसरत फतेह अली खांन, अदनाम सामी आदि।
कहा जाता है क़व्वालियों का गुजरी सदी का 60 का दशक स्वर्ण युग माना जाता है। 80 के दशक में क़व्वाली का फिल्म संगीत में शुमार बिलकुल विलुप्त सा हो गया। परन्तु बाद में क़व्वाली नये रंग रूप में फिल्मों में आयी सूफियाना क़व्वाली नुमा गाने (फ़्यूज़न)। 1997 की फिल्म 'और प्यार हो गया' से शुरूवात हुई जिसमें जावेद अख्तर द्वारा लिखी गयी क़व्वाली को 'जिन्दगी झूम कर मुस्कुरानें को हैध्यार अपनी कहानी सुनानें को है' नुसरत फ़तेह अली खांन साहब ने इसे गाया, और यहीं से क़व्वाली का दौर एक नये रूप में शुरू हुआ और सिलसिला आगे बढ़ा। फिर 1999 में आयी फिल्म कारतूस जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'इश्क़ का रूतबा इश्क़ ही जाने' जिसे लिखा 'मज़रूह सुल्तानपुरी' ने गायन नुसरत अली खांन साहब ने।[7]
इन परम्परागत क़व्वालों के अलावा पार्श्व गायकों ने भी क़व्वाली में अपना परचम लहराया जैसे– मोहम्मद रफी, मन्ना डे, किशोर कुमार, शमशाद बेगम, आशा भोषले, लता मंगेशकर, बाद में मोहम्मद अजीज, सोनू निगम, विनोद राठौर, आदि लोगों ने क़व्वालियाँ गायी। आध्यात्मिक संगीत को सांसारिक रूप में फ़्यूज़न के तिकड़म से सूफ़ी संगीत–क़व्वालियाँ लोगों का दिल जीतती रही है। ऐसी ही क़व्वाली में शामिल है– सन् 2000 में आयी फिल्म फ़िज़ा क़व्वाली के बोल थे 'पिया हाज़ी अली पिया हाज़ी अली' जिसमें ए०आर० रहमान – कादर गुलाम मुस्तफा – मुर्तजा गुलाम मुस्तफा, शौकत अली ए०आर० रहमान ने संगीत व गायन किया। 2004 में आयी फ़िल्म 'वीर ज़ारा' में भी एक क़व्वाली आयी जिसके बोल थे 'आया तेरे दर पर दीवाना' जिसे लिखा जावेद अख्तर साहब ने और इसे गाया अहमद हुसैन मोहम्मद हुसैन, जावेद हुसैन और मोहम्मद वकील ने था।[8]
फिर 2008 में आयी फिल्म 'जोधा अकबर' जिसमें क़व्वाली के बोल थे – 'ख्वाजा मेरे ख्वाजा' जिसके लेखक जावेद अख्तर साहब संगीतकार ए०आर० रहमान जी थे। 2009 में आयी फिल्म दिल्ली–6 जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'मौला मेरे मौला' जिसे गाया कैलाश खेर ने। इसी तरह 2011 में आयी फिल्म रॉकस्टार जिसमें क़व्वाली के बोल थे – 'रंगरेजा– कुन फ़ाया कुन कुन' जिसे गाया मोहित चौहान, जावेद अली, ए०आर० रहमान, इरशाद कामिल। 2015 में फिल्म आयी बजरंगी भाईजान जिसमें क़व्वाली के बोल थे 'भर दो झोली मेरी या मुहम्मद' इसके संगीतकार प्रीतम थे।[9]

इस फिल्म में क़व्वाली के दो संस्करण थे– एक अदनान समी का दूसरा इमरान अज़ीज़ मियां वाला। इमरान अज़ीज़ मियां पाकिस्तान के जाने माने क़व्वाल अज़ीज़ मियां के बेटे हैं और भारतीय फिल्मों में उन्होंने कुछ क़व्वालियाँ गायी हैं। 'नबी नबी या नबी', तेरी सूरत, मस्त कलन्दर और मै शराबी जैसी बेमिशाल क़व्वालियों के लिये जाने जाते हैं। वैसे आपको बता दे कि क़व्वाली 'भर दो झोली मेरी या मुहम्मद' सबसे पहले सन् 1975 में पाकिस्तानी फिल्म 'बिन बादल बरसात' में आयी थी।
इस तरह क़व्वाली की जो असल रूह दरगाहों व ख़ानक़ाहों में थी वो सिनेमा घरों में पहुँची जिसका वजूद ही खतम कर दिया गया। भारत में जो कि क़व्वाली बहुत पहले से थी। फिर दौर आया हज़रत अमीर ख़ुसरों का जिन्होंने क़व्वाली के क्षेत्र में अपना अहम योगदान दिया और उसे लोगों के लिये लोकप्रिय बनाया। लोक भाषाओं में उसे तब्दील कर क़व्वाली का एक नया रूप तैयार किया। जैसे–छाप तिलक, आज रंग हैरी, नमी दनाम, मन कुतों मौला, सकल बन फूल रही सरसों जैसी रचनांए आज भी क़व्वाल बहुत ही खूबसूरत ढ़ंग से पेश करते हैं। क़व्वाली फिल्मों में आने से पहले रिकार्ड के आधार पर आई। कहते हैं कि सन् 1925 में पहली बार क़व्वाली का रिकार्ड कालू

Copyright @ 2024 Author

क़व्वाल ने निकाला था। इसके बाद कई मशहूर क़व्वाल उस दौर के उन्होंने भी क़व्वाली रिकार्ड पर निकाली जिसमें शेख लाल, पीरू क़व्वाल, अजीम प्रेम रागी और मेरी जानकारी के आधार पर 1932 की एक रिकार्डिंग कल्लन खाँ साहब की प्राप्त होती है। और प्यारू क़व्वाल की (एच.एम.वी) कम्पनी द्वारा।[10]

इसी आधार पर कुछ क़व्वाली का लिंक नीचे दिया जा रहा है जिसमें चलचित्रों की क़व्वाली के रूप को विधिवत दर्शाया गया है ।

चलचित्रों के परिवेश में भारतीय क़व्वालियाँ

नं0	फ़िल्म	सन्	बोल	लिंक
1	नाईट बर्ड	1934	आंसू भी पिये ताने भी सहे	https://youtu.be/MxHInnZrtEA
2	ज़ीनत	1945	आहें न भरी शिक़वे न किये	https://youtu.be/KZRF0S-ahEo
3	अल हिलाल	1958	हमें तो लूट लिया	https://youtu.be/YUr0zsqtNPY
4	बरसात की रात	1960	न तो कारवां की तलाश है	https://youtu.be/BQRHuMBtOYY
5	चौंदवी का चाँद	1960	शरमा के ये क्यूँ परदानशी	https://youtu.be/ukvLJUA8mEA
6	शरीफ़ डाकू	1960	नाज़नीनों से हसीनों से	https://youtu.be/_xJ6d0mT2Os
7	मुग़ले–आज़म	1960	तेरी महफ़िल में	https://youtu.be/RbFyLL3XDgE
8	रूम नम्बर 17	1961	सबको मालूम है	https://youtu.be/-HyvzBA0X4k
9	दिल ही तो है	1963	निगाहें मिलाने को	https://youtu.be/4lg6N3t0LK8
10	ताज़महल	1963	जुर्मे–उल्फ़त पे	https://youtu.be/r8JEYU2VjZY
11	आज और कल	1963	कहते हैं जिसको ईश्क़	https://youtu.be/euKEPjDS1xI
12	रूस्तम सोहराब	1963	फिर तुम्हारी याद आयी	https://youtu.be/hRP_9MH65SE
13	क़व्वाली की रात	1964	हुस्न वाले हुस्न का अंजाम	https://youtu.be/F-GIVZdYkIA
14	बेनज़ीर	1966	बहारों की महफ़िल	https://youtu.be/blpObt3alf0
15	दुल्हन एक रात की	1967	कभी ये हक़ीक़त–ऐ–मुतंज़र	https://youtu.be/vf76dRck6GA
16	अधिकार	1971	जीना तो है उसी का	https://youtu.be/vkgp-aC5yYE
17	पुतलीबाई	1972	ऐसे बेशर्म आशिक़	https://youtu.be/wJ2MLxFackE
18	जंजीर	1973	यारी है इमान मेरी	https://youtu.be/7KlcWTV3MME
19	अनोखी अदा	1973	हाल क्या है दिलों का	https://youtu.be/jTT05JiYkiw
20	फाइव राईफ़ल	1974	झूम बराबर झूम शराबी	https://youtu.be/Lr3KyhK5ysw
21	गरम हवा	1974	मौला सलीम चिश्ती	https://youtu.be/RpW9a4ALBpI
22	फ़कीरा	1976	हम तो झुक कर सलाम करते हैं	https://youtu.be/mE_WgFZa6BI
23	शंकर शम्भू	1976	हम लुटने आऐ हैं	https://youtu.be/JQecDjpka7E
24	हम किसी से कम नहीं	1977	है अगर दुश्मन	https://youtu.be/mVuxB3GKBYY
25	अमर अकबर ऐंथोनी	1977	पर्दा है पर्दा	https://youtu.be/Ch-i9iBrCYQ
26	मुकद्दर का सिकंदर	1978	सलामें – इश्क़	https://youtu.be/0N6enWBR-FM
27	मुक़ाबला	1979	ओ महफ़िल की शम्मा	https://youtu.be/s5ulgOIfsa4

Copyright @ 2024 Author

28	द बर्निंग ट्रेन	1980	पल दो पल का साथ हमारा	https://youtu.be/a4icR_ekGsw
29	नाख़ुदा	1981	हक़ अली मौला	https://youtu.be/alDyyOYJZal
30	हिना	1991	देर न हो जाये	https://youtu.be/_1auahww0aQ
31	प्यार हो गया	1997	ज़िन्दगी झूमकर मुस्कुराने को है	https://youtu.be/lilFalJYyyk
32	परदेस	1997	नईं होना था	https://youtu.be/arhGIBQJvbM
33	सिर्फ तुम	1999	इक मुलाकात	https://youtu.be/3pGXGdhRfYs
34	कच्चे धागे	1999	इस शाने–करम का क्या कहना	https://youtu.be/2JU8yvomc88
35	कारतूस	1999	ग़म है या खुशी है तू	https://youtu.be/BLnGxZHkwNg
36	धड़कन	2000	दूल्हे का सेहरा	https://youtu.be/iZAv9zDeFSc
37	फ़िज़ा	2000	पिया हाजी अली	https://youtu.be/c4uYjMpE1l8
38	ये दिल आशिकाना	2000	अल्लाह अल्लाह	https://youtu.be/2MRXDb_Y_EE
39	गुनाह	2002	रूठ कर हम उन्हें	https://youtu.be/coNn76CcNEs
40	क्या यही प्यार है	2002	चाहतों की दुनिया में	https://youtu.be/to8tolSlhew
41	वीर–ज़ारा	2004	आया तेरे दर पर दीवाना	https://youtu.be/D_ShYllfh9I
42	जोधा अकबर	2008	ख़्वाजा मेरे ख़्वाजा	https://youtu.be/4YbAaRFk70o
43	दिल्ली–6	2009	अर्ज़िया सारी	https://youtu.be/dXdD1_AGBZg
44	रॉकस्टार	2011	कुन फ़ाया कुन कुन	https://youtu.be/T94PHkuydcw
45	कटियार कालीजात घूसली मराठी	2015	यार ईलाही	https://youtu.be/lgHYhoEAUYI
46	बजरंगी भाईजान	2015	भर दो झोली	https://youtu.be/vqOI22OR8gM

निष्कर्ष – इस तरह क़व्वाली के रूहानी तासीर को बदल कर चलचित्रों में आम लोगों के मनोरंजन का माध्यम बनाकर उसके कलेवर को तब्दील किया गया, जो आम श्रोता को भाव पूर्ण लगा, जिसका सिलसिला चलता आ रहा और भारतीय संगीत में उसका सफरनामा जारी है और अपनी भूमिका भारतीय संगीत के सांगीतिक परिवेश में बनायें रखी है। जिसमें महान कव्वाल कालाकारों ने अपना अहम योगदान दिया और जो आज के वर्तमान समय में इस गायकी को जीवित बना रखे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. बोड़ा, कमला, "सूफी संगीत, दरगाह से सिनेमा तक का सफर" स्वर सरिता वर्ष–09, अंक–06 जयपुर, वीणा प्रकाशन 1 दिसम्बर 2016, पृ० 34.
2. बोड़ा, कमला "सूफी संगीत दरगाह से सिनेमा तक का सफर" स्वर सरिता वर्ष–09, अंक–06 जयपुर वीणा प्रकाशन 1 दिसम्बर 2016 पृ० 34.
3. खान, यूनुस "हिंदी फिल्मों में क़व्वाली का सफर" संगना वर्ष– 08, अंक–30–31 दिल्ली संगीत नाटक अकादमी अप्रैल–सितम्बर 2018 पृ० 101–108.
4. खान, यूनुस "हिंदी फिल्मों में क़व्वाली का सफर" संगना वर्ष– 08, अंक–30–31 दिल्ली संगीत नाटक अकादमी अप्रैल–सितम्बर 2018 पृ० 101–108.
5. खान, यूनुस "हिंदी फिल्मों में क़व्वाली का सफर" संगना वर्ष– 08, अंक–30–31 दिल्ली संगीत नाटक अकादमी अप्रैल–सितम्बर 2018 पृ० 101–108.
6. खान, यूनुस "हिंदी फिल्मों में क़व्वाली का सफर" संगना वर्ष– 08, अंक–30–31 दिल्ली संगीत नाटक अकादमी अप्रैल–सितम्बर 2018 पृ० 101–108.

 Copyright @ 2024 Author

7. बोड़ा, कमला "सूफी संगीत दरगाह से सिनेमा तक का सफर" स्वर सरिता वर्ष–09, अंक–06 जयपुर वीणा प्रकाशन 1 दिसम्बर 2016 पृ० 35.
8. खान, यूनुस "हिंदी फिल्मों में क़व्वाली का सफर" संगना वर्ष– 08, अंक–30–31 दिल्ली संगीत नाटक अकादमी अप्रैल–सितम्बर 2018 पृ० 101–108.
9. बोड़ा, कमला "सूफी संगीत दरगाह से सिनेमा तक का सफर" स्वर सरिता वर्ष–09, अंक–06 जयपुर वीणा प्रकाशन 1 दिसम्बर 2016 पृ० 35.
10. बोड़ा, कमला "सूफी संगीत दरगाह से सिनेमा तक का सफर" स्वर सरिता वर्ष–09, अंक–06 जयपुर वीणा प्रकाशन 1 दिसम्बर 2016 पृ० 35.

Copyright @ 2024 Author